B.A. II Part   क्रमशः -   डॉ० उपेन्द्र कुमार
Hindi Hons   18/2/22   हिन्दी
                    पंत   एस०एन०एस० कॉलेज, महारानी

" तुम्हारे छूने में था प्राण, संग में पावन गंगा-स्नान।
तुम्हारी वाणी में कल्याण, त्रिवेणी है लहरों का गान॥"

पंत जी का काव्य कोमल और मधुर भावों का अथाह सागर है। ग्रंथि में विरहानुभूति सप्रमाण और सजीव चित्र अंकित हुए हैं, कल्पना और वेदना की पृष्ठभूमि में भावानुभूति बड़ी और प्रेषणीय हो गयी है। ग्रंथि का आधार कवि के व्यक्तिगत जीवन की प्रणय दुर्घटना है। कवि की नाव धारा में उलट जाती है। चेतना आने पर वह अपना शिश सुन्दरी की गोद में पाता है। इस सुन्दरी का ग्रन्थिबन्धन किसी अन्य के साथ हो जाता है। कवि की भावुकता और कोमलता इसे ग्रंथि में मुखर करती है।

पंत जी का वस्तु वर्णन उनकी सुकुमार कल्पना से सजीव प्रेषणीय और अनूठा बन गया है, इसकी पाठक के हृदय पर अमिट छाप पड़ती है। ग्राम्या के ग्राम युवति का एक सौंदर्य चित्र देखा जा सकता है, जिसमें सरसता, सजीवता और कोमल कल्पना कूट-कूट कर भरी है।

" उन्मद यौवन से उभर घटा सी नव असाढ़ की सुन्दर,
अति श्याम वरण स्लथ मंद-चरण इठलाती आती ग्राम युवती, वह गज
गति सर्प डगर पर।"

पंत की कोमल-कल्पना में जीवन की विभिन्न दशाओं की एक-एक सुन्दर और अनूठे चित्र उकेरे हैं। 'परिवर्तन' शीर्षक कविता भावों के अनुसार भाषा-प्रयोग, चित्र विधान, शब्द-चयन की दृष्टि से छायावादी काव्य में उच्च कोटि की कविता है। इसमें जीवन की अनेक मार्मिक स्थितियों का चित्रण हुआ है। कल्पना की कोमलता ने इस कवि में अनूठा सौन्दर्य भर दिया है। नव परिणिता के सद्यः वैधव्य का चित्र अंकित किया गया है। कवि की कोमल कल्पना ने वेदना, करुणा एवं पीड़ा का सजीव चित्र खींच दिया है-

" अभी तो मुकुट बँधा था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ,
खुले भी थे न लाज के बोल, खिले भी चुंबन शून्य कपोल,
हाय रुक गया यहीं संसार, बना सिन्दुर अंगार।"

भावों के अनुकूल भाषा और शब्द-चयन का प्रयोग करने में पंत जी की कोमल-कल्पना बहुत आगे है। भाषा और शब्द उनके संकेतों